

आत्म-रमण
Ātma-ramaṇa

कविश्री मनोहरलाल वर्णी 'सहजानंद'
Kaviśrī manōharalāla varṇī 'sahajānanda'

मैं दर्शन-ज्ञान-स्वरूपी हूँ, मैं सहजानंद-स्वरूपी हूँ ।
हूँ ज्ञानमात्र परभाव शून्य, हूँ सहज-ज्ञानघन स्वयंपूर्ण ।
हूँ सत्य-सहज आनंद धाम, मैं सहजानंद-स्वरूपी हूँ ॥१॥

Maiṁ darśana-jñāna svarūpī hūṁ, maiṁ sahajānanda-svarūpī hūṁ ।
Hūṁ jñānamātra parabhāva śūn'ya, hūṁ sahaja-jñānaghana svayampūrṇa ।
Hūṁ satya-sahaja ānanda dhāma, maiṁ sahajānanda-svarūpī hūṁ ॥1॥

हूँ खुद का ही कर्ता भोक्ता, पर मैं मेरा कुछ काम नहीं ।
पर का न प्रवेश, न कार्य यहाँ, मैं सहजानंद-स्वरूपी हूँ ॥२॥

Hūṁ khuda kā hī kartā bhōktā, para mēṁ mērā kucha kāma nahīṁ ।
Para kā na pravēśa, na kārya yahāṁ, maiṁ sahajānanda-svarūpī hūṁ ॥2॥

आऊँ, उतरूँ, रम लूँ निज में, निज की निज में दुविधा ही क्या ।
निज-अनुभव-रस से सहज-तृप्त, मैं सहजानंद-स्वरूपी हूँ ॥३॥

Ā'ūṁ, utarūṁ, rama lūṁ nija mēṁ, nija kī nija mēṁ duvidhā hī kyā ।
Nija-anubhava-rasa sē sahaja-tṛpta, maiṁ sahajānanda-svarūpī hūṁ ॥3॥

* * * A * * *